क्या यीशु मसीह किसी को धनवान बनने की गारंटी देता है?

हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह का नाम सदा महिमामय हो! मैं आशा करता हूँ कि परमेश्वर ने आपको आज का दिन देखने की अनुग्रह दी है, जैसे उसने मुझे दी है, और इसी कारण यह उचित है कि हम सभी मिलकर इस अनुग्रह में भाग लें और उसके वचन से सीखते हुए उसका धन्यवाद करें।

आजकल बहुत से लोग — विशेषकर हमारे समय में — यह समझते हैं या उन्हें यह सिखाया जाता है कि “यदि आप मसीह के पास आते हैं, तो आप अवश्य ही धनवान बनेंगे।” अब्राहम आशीषित हुआ, इसहाक आशीषित हुआ, याकूब, दाऊद, और सुलेमान आशीषित हुए — तो फिर आप क्यों नहीं होंगे, यदि आप वास्तव में अब्राहम की सन्तान हैं?

इसी सोच ने बहुत से लोगों को मसीहत को अपनाने के लिए आकर्षित किया है। लेकिन दुर्भाग्यवश, जब एक लम्बा समय बीत जाता है और वे उन आशीषों को होते नहीं देखते जिनकी उन्हें आशा थी — चाहे बहुत प्रार्थनाएँ करवाई गई हों या उन्हें बहुत सांत्वना दी गई हो — तो वे हतोत्साहित हो जाते हैं, कुछ पीछे हटने लगते हैं, और कुछ तो उद्धार को पूरी तरह से त्याग भी देते हैं।

कुछ लोग परमेश्वर से कुड़कुड़ाने लगते हैं:

“क्यों नहीं सुनी मेरी प्रार्थना?” “क्यों मेरी ज़िंदगी नहीं बदली?”
“क्यों मैं अब भी संघर्ष कर रहा हूँ?”

कुछ दूसरों को दोष देने लगते हैं:
“उसने मेरी तारे छीन ली,”
“उसने मुझे शाप दिया है,”
“वह मुझे जादू-टोना कर रहा है,” आदि।

ऐसे लोगों की प्रार्थनाएँ अक्सर केवल आत्मिक युद्ध से जुड़ी होती हैं — जिनमें वे अज्ञात शत्रुओं के खिलाफ लड़ रहे होते हैं। उनका मसीही जीवन कठिन और उलझनों से भरा होता है। वे हर समस्या की जड़ किसी बाहरी कारण में खोजते हैं:
आज ये पेड़ आशीषों को रोक रहा है,
कल यह नाम जो दादा-दादी ने दिया,
फिर किसी और दिन वे कहेंगे — “मैं रात में पैदा हुआ इसलिए मेरे साथ आत्मिक युद्ध ज़्यादा है,”
फिर वे ‘बीज बोने’ और ‘उद्धार की भेंट’ की शिक्षाओं की ओर भागते हैं,
फिर उन्हें बताया जाता है — “चमक पाने के लिए अपने व्यापार में अभिषेक का तेल छिड़को या नमक रखो।”

इस तरह उनका सम्पूर्ण मसीही जीवन आशीषों की खोज में ही चला जाता

है — और अन्त में वे थक जाते हैं। अगर आप हिसाब लगाएँ कि उन्होंने कितनी मेहनत, समय और धन इस दौड़ में लगाया, तो आप पाएँगे कि उन्हें मिला कुछ भी नहीं।

लेकिन क्यों?

भाई और बहन, ऐसा इसलिए होता है क्योंकि जब हमने मसीहत को अपनाया, तब हमें इसका सही मूल समझ नहीं आया। हम इसमें इसलिए आए ताकि हमारी इच्छाएँ पूरी हों — न कि इसलिए कि हम उद्धार पाएँ। इसी कारण हमें भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि ज्ञान की कमी से हमारा मार्गदर्शन नहीं हो रहा।

ध्यान रखें, पुराना नियम और नया नियम भिन्न हैं।
पुराना नियम केवल एक छाया था, एक प्रतीक था — आत्मिक वास्तविकताओं की जो नये नियम में प्रकट होती हैं। परमेश्वर ने अब्राहम और उसकी सन्तान से पृथ्वी पर भौतिक आशीषों का वादा किया था। इस कारण हमें आश्चर्य नहीं होता जब हम देखते हैं कि इस्राएली भौतिक रूप से आशीषित होते हैं।

परन्तु हम जो मसीही हैं, हमें पृथ्वी पर कोई विरासत नहीं दी गई। हमारी नागरिकता स्वर्ग में है:

“क्योंकि हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है, जहाँ से हम उद्धारकर्ता

प्रभु यीशु मसीह की बाट जोहते हैं।”
(फिलिप्पियों 3:20)

इसलिए हमारी आशीषें भी स्वर्गीय हैं, क्योंकि वहीं हमारा सच्चा धन रखा गया है।
जैसा कि प्रभु यीशु ने कहा:

“अपनी संपत्ति स्वर्ग में इकट्ठा करो, जहाँ न तो कीड़ा लगता है और न ही चोर सेंध मारते हैं।”
(लूका 12:33-34)

सच्चाई यह है:

मसीहत जो प्रभु यीशु मसीह लाए, उसका उद्देश्य इस संसार का धन देना नहीं है।
(मैं यह नहीं कह रहा कि वह चाहता है कि हम निर्धन रहें — नहीं), परन्तु यह स्पष्ट है कि इस संसार में तुम्हारा अमीर या गरीब होना, तुम्हारे स्वर्गीय राज्य में प्रवेश से कोई संबंध नहीं रखता।

“इसलिए यदि हमारे पास खाने को और तन ढकने को वस्त्र हों, तो हम इसी में संतुष्ट रहें।”
(1 तीमुथियुस 6:8)

जो लोग मसीह का अनुसरण केवल धन या संपत्ति प्राप्त करने के लिए करते हैं, वे अक्सर मार्ग से भटक जाते हैं। वे स्वर्ग के राज्य की बातें नहीं सुनना चाहते, न ही उन प्रचारकों को जो स्वर्ग की बातें करते हैं। क्योंकि उनका हृदय पहले से ही संसार में जकड़ा हुआ है।

वे प्रभु के हाथ को चाहते हैं — पर प्रभु को नहीं।

अगर वे किसी गरीब मसीही को देखते हैं, तो तुरंत कह बैठते हैं: “उसके पास परमेश्वर नहीं है!”

वे भूल जाते हैं कि एक समय ऐसा भी था जब एक मसीही कलीसिया बहुत निर्धन थी, फिर भी परमेश्वर ने उन्हें धनी कहा:

“मैं तेरी पीड़ा और गरीबी को जानता हूँ — पर तू धनी है।” (प्रकाशितवाक्य 2:9)

दूसरी ओर, एक कलीसिया थी जो अपने आपको बहुत धनी समझती थी, पर परमेश्वर की दृष्टि में वह नग्न, अंधी और निर्धन थी — और वह कलीसिया है लाओदिकिया, जिसमें हम आज जी रहे हैं:

“क्योंकि तू कहता है, ‘मैं धनवान हूँ, मुझे किसी वस्तु की घटी नहीं,’ और तू यह नहीं जानता कि तू अभागा, दयनीय, निर्धन, अंधा
और नग्न है।”
(प्रकाशितवाक्य 3:17)

यह भी परमेश्वर का वचन है कि:

“धनी का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है… ऊँट का
सुई की नोक से निकलना धनी के स्वर्ग में प्रवेश करने से सरल है।”
(मरकुस 10:23-25)

निष्कर्ष:

इसलिए यदि तुम मसीही हो — चाहे प्रभु ने तुम्हें बहुत दिया हो या थोड़ा — मुख्य बात यह है कि तुम सन्तोष में जीना सीखो। यह समझ लो कि तुम्हारी असली नागरिकता स्वर्ग में है।

अपने खज़ाने इस संसार में इकट्ठा न करो —

बल्कि स्वर्ग में, जहाँ न कीड़ा लगेगा, न चोर आएँगे।

“पैसों के प्रेमी मत बनो, अपने पास जो कुछ है, उसी में संतुष्ट रहो, क्योंकि उसने स्वयं कहा है — मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूँगा और न कभी त्यागूँगा।”
(इब्रानियों 13:5)

यही है सच्चा मसीही जीवन!

प्रभु तुम्हें आशीषित करे।

Share on:
WhatsApp

Print this post